● सुनो, पढ़ो और गाओ :

८. चित्र बोलते हैं

– *किरण मिश्र अयोध्यावासी*

जन्म : ५ जुलाई १९५३ **रचनाएँ :** चुंबक है आदमी, चंद्रबिंब, मंजीरा, पंछी भयभीत हैं । **परिचय :** नवगीतकार के रूप में प्रसिद्ध हैं । इस कविता में कवि ने तूलिका की ताकत एवं चित्रों की महत्ता को दर्शाया है ।

सुनो तो जरा

किसी चित्र के पात्रों के बीच होने वाले संवाद की कल्पना करो और सुनाओ ।

सुनो तो जरा की कृति करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

- किसी चित्र प्रदर्शनी में देखे हुए चित्रों के बारे में बताने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें ।
- पहला चित्र उन्होंने कब और कैसे बनाया एक दूसरे से पूछने के लिए कहें ।
- अन्य चित्र दिखाकर पात्रों के बीच होने वाले संवाद पर चर्चा करें और संवाद कहलवाएँ ।

आओ, बैठो यहाँ मन खोलते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें, जब मित्र पूछते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

रंग लगी तूलिकाएँ कैनवास रँगतीं हैं ।
ऐसा लगता कोई नया सृजन करती हैं ।।
सप्तरंगी जीवन के दृश्य खोजते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

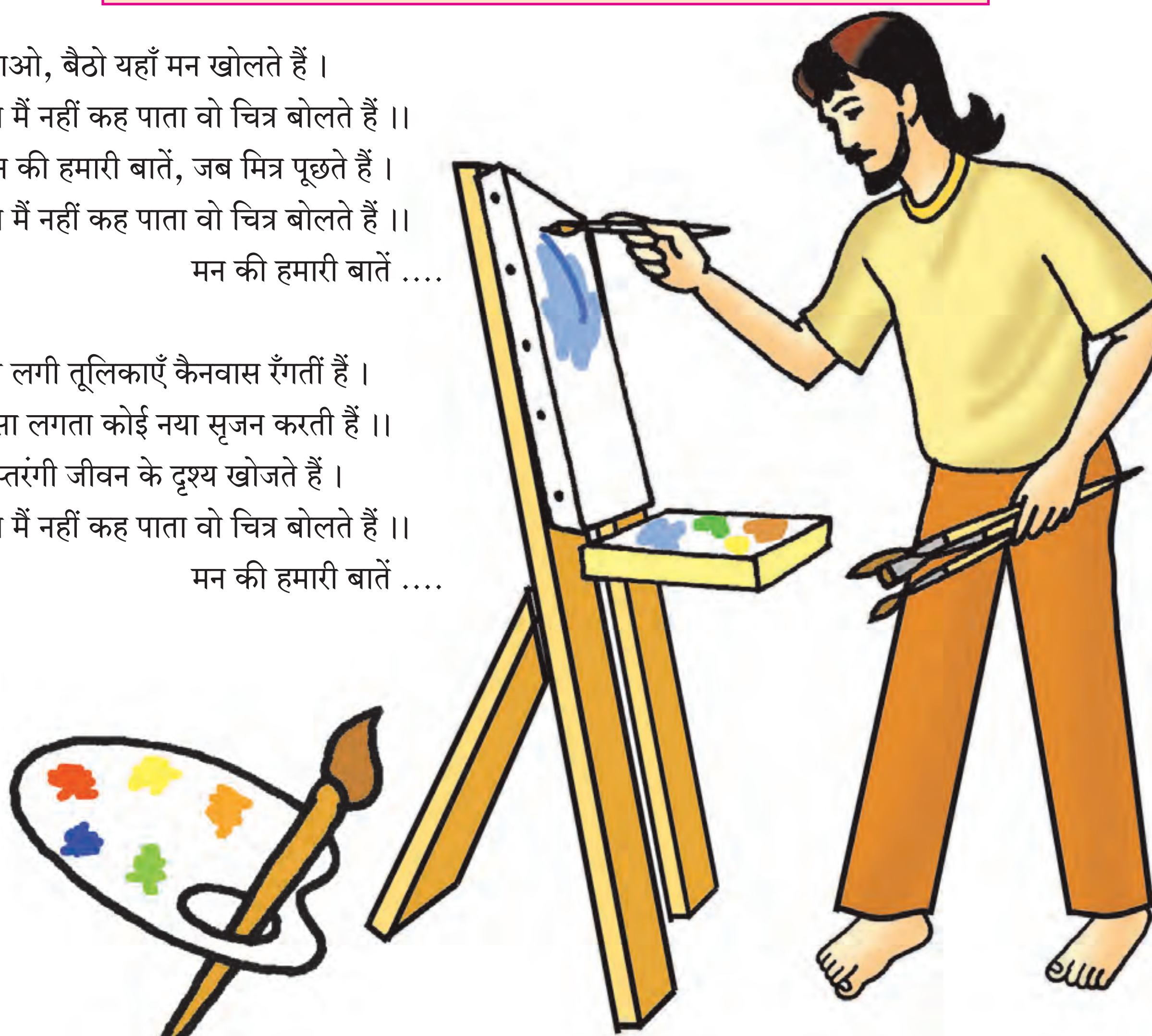

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट में कविता का पाठ कराएँ । कविता में आए भावों पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से चर्चा करें । कविता के कौन-से भाव उन्हें अच्छे लगे, बताने के लिए प्रेरित करें ।

विचार मंथन

।। प्रकृति में बिखरे कितने रंग, मन में भर जाती उमंग ।।

चित्र मेरे आँखों तक ही नहीं सीमित हैं ।
अंतर्मन से देखो हम उनमें जीवित हैं ।।
बस आप तक पहुँचने की राहें ढूँढ़ते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

चित्रों की भाषा पढ़ने की जिन्हें आदत ।
वो जानते हैं चित्रों की ताकत-इबादत ।।
रचती वही तूलिका, जो मन में सोचते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

चित्रों के रंग, जीवन में रंगों को भरते हैं ।
चिंतन के सपनों को साकार करते हैं ।।
बनता वही चित्र जो भीतर से देखते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

- विद्यार्थियों से कहें कि वे अपनी पसंद का एक चित्र लेकर उसके बारे में दस से पंद्रह वाक्य लिखें । कविता में आए अनुस्वार, अनुनासिक, पंचमाक्षरयुक्त शब्द खोजवाकर इनका वर्गीकरण कराएँ तथा अन्य पंचमाक्षरों से बने शब्द लिखवाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
सृजन = रचना
इबादत = पूजा
सप्तरंगी = सात रंगोंवाला
तूलिका = चित्र अंकित करने की कलम या कूँची
राहें ढूँढ़ना = हल निकालना
सपने साकार करना = लक्ष्य प्राप्त करना ।

खोजबीन

रंग कैसे बनते हैं ? ढूँढ़ो और उनके उपयोग पढ़ो :

- प्राकृतिक रंग
- कृत्रिम रंग

जरा सोचो ......चर्चा करो

अगर चित्रों में जान आ जाए तो ......

बताओ तो सही

विविध क्षेत्रों में काम करने वाले कर्मचारी किस रंग की पोशाक (गणवेश) पहनते हैं ?

- नर्स
- वकील
- यातायात पुलिस
- दमकल कर्मचारी
- डाकिया

वाचन जगत से

ब्लॉग से किसी साहसी/वैज्ञानिक कहानी का वाचन करो ।

अध्ययन कौशल

किसी कहानी पर आधारित चित्रों का फोल्डर बनाकर कहानी सुनाओ ।

स्वयं अध्ययन

नीचे दिए गए शब्दों का लिप्यंतरण रोमन (अंग्रेजी) में करो :

तूलिका	भोजन	प्रातः	चाँदनी	जिम्मेदारी
....	....	....	....	....
कौमुदी	पैदल	गेंद	वाद्‌यवृंद	शान
....	....	....	....	....

मेरी कलम से

समाचार पत्र में से मुख्य समाचारों के पाँच वाक्यों का अनुवाद करो ।

✲ **उत्तर लिखो :**

(क) 'चित्र मेरे आँखों तक ही नहीं सीमित' ऐसा क्यों कहा है ?

(ख) रंग लगी तूलिकाएँ कौन-सा काम करती हैं ?

(ग) चित्र में कौन-सी ताकत होती है ?

(घ) चित्रों के रंग किन्हें साकार करते हैं ?

सदैव ध्यान में रखो

शब्दों की अपेक्षा चित्र गहरा असर डालते हैं ।

भाषा की ओर

नीचे दिए हुए वाक्य पढ़ो और मोटे टाईपवाले शब्दों की तरफ ध्यान दो :

(१) अनय उत्तम **तैराक** है ।

(२) मेहल **हँसोड़** लड़की है ।

(३) वृक्ष की **कटाई** पर रोक लगाई है ।

(४) इस गाँव के लोग **झगड़ालू** नहीं हैं ।

तैराक, हँसोड़, कटाई, झगड़ालू इन शब्दों में मूल शब्द तैरना, हँसना, काटना, झगड़ना ये क्रियाएँ हैं । मोटे टाइपवाले शब्द क्रिया में प्रत्यय लगाने पर बने हैं । अतः ये '**कृदंत**' हैं ।

(१) **राष्ट्रीय** एकता को बनाएँ रखें ।

(२) देशवासियों में **अपनत्व** का भाव है ।

(३) भारत के **प्राकृतिक** दृश्य अवर्णनीय हैं ।

(४) हिमालय की **ऊँचाई** देखते ही बनती है ।

राष्ट्रीय, अपनत्व, प्राकृतिक, ऊँचाई इन शब्दों में मूल शब्द राष्ट्र, अपना, प्रकृति, ऊँचा हैं । इनमें राष्ट्र (संज्ञा), अपना (सर्वनाम), प्रकृति (संज्ञा) और ऊँचा (विशेषण) है । ये शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषणों में प्रत्यय लगाने पर बने हैं । अतः ये '**तद्धित**' हैं ।

✲ निम्न गद्यांश को पढ़कर तद्धित तथा कृदंत प्रत्यय छाँटो तथा उसका विग्रह करके तालिका में लिखो-

एक लकड़हारा था । वह एक दिन लकड़ियाँ बेचने हाट की ओर जंगल के रास्ते निकला । रास्ता पथरीला, कँटीला, टेढ़ा-मेढ़ा और डरावना था । वह दोपहर में थकान के कारण सो गया । कुछ समय के बाद आगे बढ़ा । वह जब जंगल से गुजर रहा था तो कुछ डाकुओं ने उसे घेर लिया और धमकी दी । वह बोला-''मैं कोई धनवान नहीं हूँ, अपनी कमाई से पेट पालता हूँ ।'' यह सुनकर डाकू वहाँ से चल पड़े ।

क्र.	शब्द	तद्धित		शब्द	कृदंत	
		मूल शब्द	प्रत्यय		मूल शब्द	प्रत्यय
१.	लकड़हारा	लकड़ी	हारा	थकान	थकना	आन
२.						
३.						
४.						